पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय

दो दिवसीय (ऑनलाइन/ऑफलाइन)

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्व भाषा के रूप में हिंदी : स्थिति और चिंतन

आयोजक

हिंदी विभाग एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपर्क सूत्र : +91-9888618975, +91-9305564350

अणु डाक - cup.hindi@gmail.com

अंतर्जाल – www.cup.edu.in

पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय : सामान्य वृत्त

भाषिक दृष्टि से पंजाब एक अत्यंत समृद्ध राज्य है। यहाँ की भाषाई विविधता और साहित्यिक परंपरा इसकी सांस्कृतिक पहचान को विशिष्ट बनाती है। पंजाब राज्य में पंजाबी, हिंदी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं का अध्ययन एवं अध्यापन विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक सुव्यवस्थित रूप से हो रहा है। इसके साथ ही पालि, फारसी, अरबी, जर्मन और फ्रेंच जैसी भाषाओं में भी अध्यापन और शोध कार्य सक्रिय रूप से संचालित किए जा रहे हैं। पंजाब के मालवा अंचल में स्थित पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा, जिसकी स्थापना संसदीय अधिनियम-25 के अंतर्गत वर्ष 2009 में हुई थी, भाषाई एवं सांस्कृतिक अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है। इस विश्वविद्यालय में भाषा, साहित्य एवं संस्कृति विद्यापीठ के अंतर्गत पंजाबी, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाषाओं का उच्च स्तरीय पठन-पाठन, शोध एवं सृजनात्मक कार्य हो रहा है। इस विद्यापीठ का हिंदी विभाग विशेष महत्त्व रखता है। वर्ष 2018 से यह एक स्वतंत्र विभाग के रूप में कार्यरत है। विभाग का उद्देश्य न केवल हिंदी भाषा और साहित्य का गहन अध्ययन-अध्यापन करना है, बल्कि भारतीय भाषाओं के मध्य हिंदी को एक सेतु भाषा के रूप में स्थापित करना भी है। हिंदी विभाग, हिंदी के प्रचार-प्रसार, भाषा-संवर्द्धन, समकालीन विमर्शों पर शोध तथा अंतःभाषिक संवाद की दिशा में सतत प्रयासरत है। यह विभाग न केवल क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की प्रासंगिकता को सुदृढ़ करता है, बल्कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी हिंदी को एक सशक्त और जीवंत भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का कार्य कर रहा है।

विषय की रूपरेखा

"विश्व भाषा के रूप में हिंदी : स्थिति और चिंतन" विषयक इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य हिंदी की वर्तमान वैश्विक स्थिति का बहुआयामी मूल्यांकन करना और इसके भविष्य की दिशा पर चिंतन करना है। हिंदी आज केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि प्रवासी भारतीय समाज, साहित्य, सिनेमा, पत्रकारिता, डिजिटल मीडिया और शिक्षा संस्थानों के माध्यम से विश्व पटल पर अपनी पहचान बना चुकी है। इस संगोष्ठी के माध्यम से हिंदी की अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति, उसकी प्रासंगिकता और संभावनाओं पर विचार किया जाएगा। विशेष रूप से प्रवासी समाज में हिंदी की भूमिका, अनुवाद और तकनीक के नए आयाम, सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों पर हिंदी का विस्तार, तथा शिक्षा और रोजगार में हिंदी की संभावनाओं पर गंभीर विमर्श किया जाएगा। संगोष्ठी का ध्येय यह भी है कि हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच एक सेतु-भूमिका स्थापित की जा सके, जिससे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी को और अधिक सशक्त बनाया जा सके। इस संवाद से न केवल हिंदी की समकालीन स्थिति स्पष्ट होगी, बल्कि इसके वैश्विक भविष्य की दिशा में ठोस सुझाव और नीतिगत आधार भी निर्मित होंगे।

संगोष्ठी के उद्देश्य

- हिंदी की वर्तमान वैश्विक स्थिति का मूल्यांकन करना।
- अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी के योगदान पर चिंतन करना।
- भारतीय भाषाओं और हिंदी के बीच सेतु-निर्माण की आवश्यकता पर बल देना।
- हिंदी को एक सशक्त, जीवंत और विश्व भाषा के रूप में स्थापित करने के मार्ग तलाशना।
- वैश्विक स्तर पर डिजिटल युग, तकनीक और अनुवाद के संदर्भ में हिंदी की प्रासंगिकता को समझना।
- वैश्विक स्तर पर शिक्षा, संस्कृति और रोजगार के क्षेत्र में हिंदी की संभावनाओं पर विचार-विमर्श करना।

संगोष्ठी के उप-विषय

- हिंदी भाषा और साहित्य का वैश्विक स्वरूप
- विश्व पटल पर हिंदी : वर्तमान स्थिति और भविष्य की दिशा
- हिंदी का भविष्य : चुनौतियाँ, संभावनाएँ और रणनीतियाँ
- हिंदी और विदेशी भाषाएँ : अंतःसांस्कृतिक संवाद
- समकालीन हिंदी साहित्य की वैश्विक प्रासंगिकता
- शिक्षा और शोध के क्षेत्र में हिंदी की संभावनाएँ
- हिंदी का भाषायी उद्योग और आर्थिक संभावनाएँ
- हिंदी और भारतीय भाषाएँ : सेतु-निर्माण की दिशा
- डिजिटल युग में हिंदी का अंतरराष्ट्रीय विस्तार और प्रभाव
- हिंदी साहित्य के अनुवाद की विश्व साहित्य में स्वीकार्यता
- सिनेमा, संस्कृति और हिंदी का वैश्विक प्रभाव
- अंतरराष्ट्रीय शोध-जर्नल्स और हिंदी का प्रतिनिधित्व
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद और हिंदी का भविष्य
- संबंधित अन्य विषय

संरक्षक

आचार्य राघवेंद्र प्रसाद तिवारी
कुलपति, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय

आचार्य किरण हज़ारिका
प्रति-कुलपति, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय

डॉ. विजय शर्मा
कुलसचिव, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय

आचार्य अल्पना सैनी
अधिष्ठाता, भाषा साहित्य और संस्कृति विद्यापीठ

आचार्य राजेन्द्र कुमार सेन
अध्यक्ष, हिंदी विभाग

मार्गदर्शक मण्डल

आचार्य आर.के.वुसुरिका
आचार्य अंजना मुंशी
आचार्य मोनिशा धीमान
आचार्य जमीरपाल कौर
आचार्य संजीव ठाकुर
आचार्य गौरी शंकर
आचार्य बी. पी. गर्ग
डॉ. राजकुमार शर्मा

सलाहकार समिति

आचार्य रमनप्रीत कौर
आचार्य विपिन पाल
डॉ. बलि बहादुर
डॉ. पुनीत पाठक
डॉ. दीपका श्रीवास्तव
डॉ. अमनदीप सिंह
डॉ. रूबल कन्नौजिया
डॉ. रिशपाल सिंह विर्क

आयोजन समिति

डॉ. सरबजीत सिंह
डॉ. पृथ्वीराज
डॉ. महेश मीणा
डॉ. सोमेश राय
डॉ. आदीश वर्मा
डॉ. कुलीन जोशी
डॉ. चारू यादव
डॉ. सतप्रीत जस्सल

संयोजक

डॉ. अमित कुमार सिंह कुशवाहा
+91- 9305564350

आयोजन सचिव

डॉ. मधुलिका बेन पटेल
+91- 9899131042

डॉ. कुलभूषण शर्मा
+91- 9811765083

डॉ. समीर महाजन
+91- 7888654739

पंजीकरण हेतु लिंक

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभागिता हेतु पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में https://forms.gle/JuR7n26HHx71swz97 पर पंजीकरण करना आवश्यक है।

पंजीकरण शुल्क

प्रतिभागी	शुल्क
शिक्षक	500
शोधार्थी	300

स्कैन करके भुगतान

व्हाट्स-ऐप समूह से जुड़ने हेतु लिंक

https://chat.whatsapp.com/G7KzL5hCYwfJChnwPE4Gyr

शोध पत्र हेतु निर्देश

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध-पत्र वाचन हेतु विषय-संबंधी शोध प्रपत्र/लेख सादर आमंत्रित हैं। उत्कृष्ट शोध पत्रों को आई.एस.बी.एन. युक्त पुस्तक अथवा पीयर-रिव्यू पत्रिका में प्रकाशित करने की योजना है।

- शोध पत्र मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए।
- शोध पत्र विषय से संबंधित किसी भी उपशीर्षक पर प्रस्तुत किया जा सकता है।
- शोध पत्र का सारांश 14 सितंबर, 2025 तक तथा अधिकतम 3000 शब्दों का पूर्ण आलेख 30 सितंबर, 2025 तक निम्न ईमेल पर प्रेषित करें: cup.hindi@gmail.com
- शोध पत्र यूनिकोड फॉन्ट में टाइप किया हुआ होना अनिवार्य है।

संगोष्ठी से संबंधित किसी भी जानकारी हेतु कृपया अधोलिखित से संपर्क करें

शोधार्थी

सुश्री गुरप्रीत कौर – 98159 11164

सुश्री पूनम – 82393 68138

श्री सुखा राम – 8875631806

श्री रविंदर – 99927 80240